Review of Research
International Online Multidisciplinary Journal
ISSN : 2249-894X Impact Factor 3.1402 (UIF) Volume -5 | Issue - 6 | March - 2016

'तडप मुक्ति की ' हिंदी तथा 'इथे माणसाला स्थान नाही ' मराठी दलित नाटकों का तुलनात्मकअध्ययन

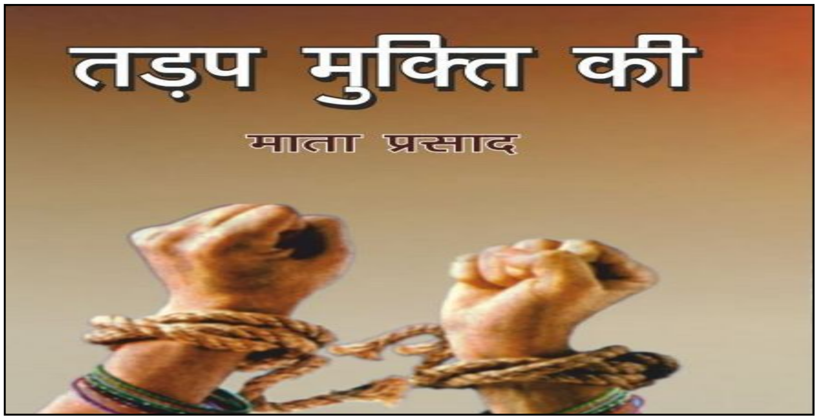

प्रा.आर. डी. कानडे
हिंदी विभागाध्यक्ष, एस.एस.जी.एम.कॉलेज, कोपरगांव, तालुका कोपरगाव जि.अहमदनगर.

१. प्रस्तावना -

समाज का दर्पन साहित्य है। उसके कई आयम है उसमें से एक 'दलित साहित्य' है उसका प्रथम विस्फोट मराठी भाषा में हुआ इसकी प्रमुख वजह यह है की महाराष्ट्र की भूमि ने अनेक महान विभूतियों को जनम दिया है। उनके निरंतर प्रयास से महाराष्ट्र विकसित है जिसका प्रभाव अन्य प्रदेशों पर पडा है। महाराष्ट्र का दलित साहित्य अपनी कुछ अहमियत रखता है इसके मूल में डॉ. बी. आर. अंबेडकर का योगदान तथा भूमिका महत्वपूर्ण रही है। महात्मा फुले, राजर्षि शाहु तथा महामानव अंबेडकरने दलितों में जीवन जीने का हौसला बडाया महात्मा फुले महाराष्ट्र के ही नहीं देश के समाज सुधारको में सर्वाधिक आक्रमक तथा समाज व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठानेवाले प्रथम विद्रोही व्यक्ति है। पशुवत व्यवहार करने वालों के विरोधी शाहु महाराज थे, जिन्होंने क्रांति का बिगुल बजाया और महामानव अंबेडकर की स्तुत्य व नित्य चिंतनधारा दलित साहित्य सृजन के मूल में काम कर रही है इसलिए इसकी गति निश्चित दिशा की और है , इसमें कोई संदेह नहीं।

दलित साहित्य की नींव सत्य, विद्रोह, वर्ण व्यवस्था के प्रति नकार, वैज्ञानिक सोच, समता बंधुता, सामाजिक न्याय पर आश्रित है, उसमें मानवता संचारित है उसे पढकर व्यक्ति अपने बढने वाले नाखून को बार बार काटने की कोशिश करता है। सत्य ही शिव है , शिव ही सुंदर होने के कारण उसे जानने की तमन्ना मनुष्य में होती है। उसकी इसी विशेषता के कारण आजकल के अधिकांश विद्वानों का रुझान दलित साहित्य की तरफ है। यह साहित्य प्रतिशोध का नहीं है, बल्कि आजके मनुष्य को मानवता की ओर ले जानेवाला एक माध्यम है। यह साहित्य इतिहास का आधार लेकर अनादिकाल से आ रही झूठी परंपराओं का पर्दाफाश करता है। मानवता निर्वाह के खातिर यह एक सुखद प्रयास है। इसी बात से प्रभावित होकर मैंने तडप मुक्ति की हिंदी तथा 'इथे माणसाला स्थान नाही ' मराठी दलित नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन इस विषय का चयन किया है इसमें प्राचार्य डॉ. के . एच. शिंदे, प्रा. डॉ. नेरे मॅडम, जी की प्रेरणा है।

१.१ संशोधनपरक निबंध का उद्देश्य -

२० वीं सदी में दलित साहीत्य पर कई अनुसंधान हुए हैं I अनुसंधान के नये - नये व्दार दिन-ब-दिन खुल रहे है इस लिए इस निबंध के व्दारा नई पीढी को एक उचित दिशा मिले इस उद्देश्य से प्रस्तुत शोध निबध लिखने का प्रयत्न है I निम्मलिखित बातें शोध संभावनाओं सबंधी है I

१. २१ वीं सदी के हिंदी दलित नाटकों के विचार बोध को जानना I
२. हिंदी दलित नारी की दशा एवं दिशा को जानना या अध्ययन करना I
३. भारतीय साहित्य में चित्रि त दलित चेतना की यथार्थता पर प्रकाश डालना I
४. पंचमवेद या पंचवेद नाटक विधा के महत्व को समझना I
५. हिंदी तथा मराठी दलित साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन संबंधि अंनुसंधान के कई अवसर प्राप्त हैं

२. दलित चेतना के मानबिंदु -

दलित चेतना डॉ. बी. आर. अंबेडकर के जीवन दर्शन से उर्जा ग्रहण करती है I सभी दलित लेखक इस तथ्य से सहमत है, उनके व्दारा स्वीकृत किए चेतना के मानबिंदु इस प्रकार हैं I

१. डॉ. बी. आर. अंबेडकर के विचार दर्शन को स्वीकारना I
२. पाखंड - कर्मकांड का विरोध करके वैज्ञानिक दृष्टिबोध को समझना I
३. वर्ण व्यवस्था का विरोध, जातिभेद - सांप्रदायिकता का विरोध करना I
४. भाईचारा, मानवता, स्वतंत्र ता, सामाजिक न्याय का समर्थन करना I
५. सामाजिक परिवर्तन करने में आस्थाभाव जताना I
६. ईश्वरवाद, पारंपारिक सौदर्यशास्त्र , भाषावाद, लिंगवाद, पुंजीवाद, के खिलाफ चिंतन करना और उसकी अनुभूति को व्यक्त करना दलित चेतना है I

प्रा. कुमोद पावडेजी लिखती है " इन्सानियत की दुनिया में इन्सान को ही प्रथम स्थान होना चाहिए I पंछी , मछली , पशु सबंधि करूना के विषय दलितों के पश्चात होने होने चाहिए I " [१] इस तरह की दलित चेतना साहित्य में प्रकट है I इसमे अंबेडकरी विचारों को अभिव्यक्त किया हैं I

३. हिंदी दलित नाटकों पर मराठी दलित नाटकों का प्रभाव -

महात्मा फुले 'तृतीय रत्न' नामक नाटक के रचनाकार है जो काफी चर्चित है I इसमें किसान की सादगी और ब्राम्हणों के भ्रटाचार को समझाया है I महात्मा फुले के सत्यशोधक जलसे के प्रभाव स्वरूप अंबेडकरी जलसे विकसित हुए I श्री भीमराव करडक की राय से जलसा का अर्थ अस्पस्यों के अधिकारों का इतिहास है I इससे लोकनाटय तमाशा विकसित हुआ और इनसे मराठी दलित नाटक विकसित हुए I डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने दलितों को समय - समय पर जो सलाह दिये, उसे नाटक विधा में अभिव्यक्त करने का प्रयत्न दलित नाटककारों ने किया इसकी एक पुरानी परंपरा रही है I आधुनिक दलित नाटक २० वीं सदीके बिच अधिक विकसित हुए I तमाशा, जलसे, काव्य नाटक, नुक्कड नाटक आदि रूपो में ये नाटक काफी विकसित हुए I

साठोत्तरी मराठी दलित नाटको में - नोकरीच्या जाळयात, माणुसकीचे बंड, मृत्युपत्र , पिंज-यातील पोपट, डाग, वाट चुकली, आधार स्तंभ, बामनवाडा, इथे माणसाला स्थान नाही, साक्षीपुरम, मन्वंतर, आम्ही देशाचे मारेकरी, थांबा रामराज्य येतयं, पोतराज, न्याय, काळोखाच्या गर्भात, आदि महत्वपूर्ण नाटक उदाहरण स्वरूप हैं I इन मराठी नाटकों का हिंदी दलित लेखकों पर प्रभाव पडा हैं I

हिंदी दलित साहित्य एमं नाटकों पर मराठी दलित साहित्य का काफी प्रभाव रहा है I मराठी का यह एक ऐसा स्त्र ोत है I जिनका हिंदी पर सर्वाधिक प्रभाव रहा है I हिंदी भाषा ने भारत के कई प्रादेशिक भाषाओं को अनेक बातों मे प्रभावित किया है I लेकिन दलित साहित्य के सबंध में हिंदी मराठी साहित्य से प्रभावित है I इसे नकारा नहीं जा सकता I महाराष्ट्र में कई सामाजिक अंदोलन हुए अनेक तात्विक तथा संशोधनात्मक लेख प्रसिद्ध हुए I डॉ. बी. आर. अंबेडकर के विचारों से प्रेरित होकर साहित्य में क्रांति हो गई और मराठी साहित्य की व्यापकता बढ गई दलित साहित्य केवल महाराष्ट्र तक सीमित नहीं रहा बल्कि वह विश्वमंच का विषय बन गया है I इसके परिणाम स्वरूप उत्तर भारत में दलित गीत गाए जा रहे हैं I उसकी गूँज गाँव तथा कस्बों में गुंजती हैं I" [२]

हिंदी में नाटक लेखन की शुरूआत सन. १९८० ई. के पश्चात हो गई I हिंदी की तुलना में मराठी दलित नाटक का सूत्र पात सन १९५५ ई. लिखे गए 'युगयात्र ा' से है I अतः मराठी दलित नाटकों की संख्या हिंदी की तुलना में अधिक है I अब मराठी हिंदी दलित थिएटर दलित नाटकों की खोज में कुछ उर्जा बटोरने में प्रयत्नशील है I

४. चयनित दलित नाटकों का वर्ण्यविचार -

साठोत्तरी हिंदी तथा मराठी दलित नाटकों के तुलनात्मक अध्ययन में निम्नांकित नाटकों का चयन किया हैं I

१. तडप मुक्ति की - माताप्रसाद गुप्त
२. इथे माणसाला स्थान नाही - बाजीराव रामटेके

४.१ तडप मुक्ति की शीर्षक हिंदी दलित नाटक का वर्ण विचार -

स्कूल अध्यापक से मंत्र ी तथा फिर गवर्नर बने श्री माताप्रसाद सुप्रसिदध दलित नाटककार है जिन्होंने दलित जीवन को बहुत गहराई तथा सूक्ष्मता से देखा है, इसलिए वे दलित समाज जीवन का यथार्थ चित्र ण कर सके उनके मतानुसार दलित समाज सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समस्याओं से घिरा है वह अपनी मुक्ति के लिए हाथ पैर पटक रहा है, लेकिन मुक्त नहीं हो पा रहा है ।

तडप मुक्त की शीर्षक नाटक मे दलितों की बहुविध प्रकार की समस्याओं को चित्रि त किया है हर समस्या तथा चुनौति का दलित के पास जवाब होना चाहिए तभी वह सुख पाएगा अन्यथा चुनौतियॉं तथा खतरें उसके सामने कम नहीं हैं । इस बात को मददे नजर रखते हुए नाटककारों ने अपनी व्यापक दृष्टि का परिचय दिया है । इस सबंध में जयप्रकाश कर्दम की यह राय देखने योग्य है,
" आकार की दृष्टि से बेशक यह नाटक कोई बडी क़ृति नहीं है किन्तु विषय वस्तु की दष्टि से यह किसी भी बडी क़ृति से कम नहीं है । "[३]

इस नाटक का नायक मनोजकुमार दलित है जिसका चरित्र ांकन आदर्शवत है वह लखनऊ विश्वविघालय का स्नातकोत्तर छात्र होने के साथ साथ दलित युवक कल्याण समिती का अध्यक्ष भी है । वह इसके माध्यम से दलितों की उलझनों को दूर करता है ।

साथ ही सामाजिक जागृति के लिए भी काम है । वह स्वाभिमानी, साहसी, सच्चरित्र का युवक है इसलिए स्वजाति के गुंडो से बचाव करनेवाली मनुवादी पार्टी की सदस्य सुषमादेवी उसके साहस एवं शूचीता की ओर आकृष्ट हो जाती है । उसकी सादगी और मानवीय गुणों से प्रभावित होकर वह उसके समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखती है मगर मौजुदा हालत को मददेनजर रखकर नायक मनोजकुमार उसे ब्राम्हणकुल में विवाह बद्ध होने की सलाह देता है जैसे - मैं तुम्हे यह सलाह देना चाहता हूँ कि किसी पढे लिखे भले ब्राम्हण से तुम विवाह कर लो । सभी जातियों में अच्छे - बुरे लोग होते हैं । समाज में दुष्ट है तो क्या सज्जन नहीं है ? तुम मनुवाद की समर्थक रही हो मनुवाद ने नस्लवाद, जातिवाद को बढावा दिया, जिससे समाज में विघटन की स्थिति है । तुम मेरे साथ रहकर इसे दूर नहीं कर पाओगी । [४] इस सलाह पर ब्राम्हण कन्या सुषमादेवी अपने विचार की दृढता इन शब्दों में अभिव्यक्त करती है, "मनु को भला बुरा कहने से ही जाति - पाति नहीं टूटेगी आप जिन डॉ. अंबेडकर को आदर्श मानते है, उन्होंने स्वयं कहा है कि वर्ण और जाति व्यवस्था समाप्त करने के लिए अन्तर्जातीय खान-पान का आयोजन किया जाए । यह वास्तविक उपचार नहीं है । इसका उपचार अंतर्जातीय विवाह है । केवल खुन के मिलने से ही रिश्ते की भावना पैदा होगी, वर्ण और जाति-प्रथा उसी स्थिति में समाप्त होगी, अत: रोटी - बेटी के संबंध सामान्य व्यवहार में आ जाए ।"[५]

इस तरह प्रस्तुत नाटक का **फलक** कथा की अपेक्षा विमर्श के रूप में बहुत बडा है, महत्त्वपूर्ण लगता है । इसमें अभिव्यक्त स्त्र ी विमर्श का दलित विमर्श दलित नेताओं की दोंगली भूमिका आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार का स्वरूप और दलितों की करुणा वस्था, मध्यवर्ग तथा राजनीतियों में व्यक्त ब्राम्हणवाद धर्मपरिवर्तन की समस्याएँ, अज्ञान - अंधविश्वास, सरकारी सुविधाओं से दलितों को दूर रखने का षडयंत्र और आधुनिक ब्राम्हणकन्याओं की समन्वयात्मक सोच पर प्रकाश डाला है ।

प्रस्तुत नाटक में माताप्रसाद की चेतना इस प्रकार व्यक्त हुई हैं ।

१. सुविधाओं का प्रावधान होना अलग बात है, उनका अमल होना दूसरी बात है । समाज, शासन, सत्ता सब जगह ब्राम्हणवादियों का कब्जा हैं ।
२. स्वतत्र ता के कई साल बित जाने पर भी सरकार आरक्षण का कोटा आज तक पूरा नहीं कर सकी बल्कि उल्टे आरक्षण का विरोध किया जा रहा है ।
३. केवल सरकारी सुविधाओं के बल पर दलितों का उत्थान होना संभव नहीं बल्कि योग्य सक्षम दलित लोग अंदर की हीनता को निकालकर फेंक दें कि वे किसी से कम हैं और अपने अंदर यह विश्वास पैदा करें कि वे किसी से कम नहीं है ।

४.२ ' इथे माणसाल स्थान नाहीं ' शीर्षक मराठी दलित नाटक का वर्ण्यविचार :-

दलित रंगभूमि पर विद्रोह का रूप दिखानेवाले इस दलित नाटक के रचनाकर श्री. बाजीराव रामटेके है जिसका यह प्रायोगिक नाटक है । इस नाटक का प्रथम प्रयोग नागपूर के धनवटे रंगमंदिर में १८ अक्तूबर १९८१ ई. में. हुआ है । इस नाटक के लेखन में डॉ. भदन्त आनंद कौशल्यायननी की प्रेरणा महत्तपूर्ण मानी जाती है ।

प्रस्तुत नाटक का प्रमुख पात्र 'शंभु बोवा' है । इसे तीन अंकों में प्रस्तुत करके मानवता पर कई सवाल प्रकट किए हैं । शंभू पवार अर्थात शंभू बोवा पांडुरंग भक्त ब्राम्हण है जो उसके भाई ने कलंकित किये अस्पृश्य युवती के साथ शादी करके मनवता दर्शाता है । खुद ब्राम्हण होकर महार पीडित युवती के प्रति मानवता दिखाता है । उसपर बेहर प्रेम करनेवाला **मुंकुद** सैनिक है वह जब रिटायर्ड होकर अपने गाँव आता है तो उसकी माशूका शंभू पवार की पत्नी हुई वह देखता है तब वह शादी बिना जिंदगी कॉंटने का फैसला करता है । उसपर अंबेडकरी विचारोंका गहरा असर है उसका भातिजा यादव **सखु** से प्रेम करता है परंतु सखु पाटील के पुत्र **विठ्ठल** के साथ शादी करना चाहती है । इस बात को लेकर अंबेडकरी विचार के **सखाराम** अपनी परेशानी इन शब्दों में व्यक्त करता है, "सापाचा पिल्ला जलमभर दुध पाजला तरी तो जहरच वकल, माझा पक्का इसवास आहे. सापासंग खेलावा सखुबाई गारुडयानं, आपल्या सारख्याचं काम नाही ते. " [६]

सखु को अपने प्रेमी विठ्ठल पर पूरा भरोसा होता है परंतु वह अपने पिताजी की आज्ञानुसार किसी दूसरी लडकी से विवाह करता है। शंभू बेटी की प्रेमभावना को समझते हुए कहता है ,"तेरी यह गलती नहीं है, कुदरत ही गलत करता है। यहाँ व्यक्ति -व्यक्तियों में भेद करता है, और दूसरी तरफ कुदरत किसी तरह का भेद न करके स्वाभाविकता का निर्वाह करता है।"[७]

शंभू पवार का लडका विनायक कीचड के रास्ते से जाने के बजाय सवर्णा के कुएँ के समीप से जाना पसंद करता है। इसी कारण उसे सवर्णा के द्वारा मारपीठ होती है, इस पर दलित समाज विद्रोह करता है। यादव तथा मुंकुद का क्रोध बढ जाता है। शंभु उन्हें कुछ कहने का साहस जुटाकर सब परमेश्वर की ईच्छा पर संभव है ऐसा कहता है, उसपर उसका बेटा विनायक गुस्से में कहता है, "पांडुरंगाची मर्जी ? कोणता पांडुरंग हा ? तो पांडुरंग हाच आहे ना ? ज्याची पूजा एकनिष्ठपणे तुम्ही रात्रंदिवस करता ? "[८]

सखु की भी ईश्वर पर जो आस्था थी मिट जाती है। गाँव के पाटील पुत्र विठ्ठल ने सखु के साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की, इस घटना से शंभू का हिंदू धर्म संस्कृति के प्रति का विश्वास तबाह होता है और उन्हें मन ही मन बाबासाहेब अंबेडकर ने धर्म परिवर्तन करने के फैसले का कारण मिलता है। सुवर्णो व्दारा पीडीत होने पर हिंदू धर्म धर्म नहीं बल्कि एक विकृति है, ऐसा दलितों को लगता है। सखु अपने पिताजी के समक्ष कहती है, बाबा ! लहान तोंडी मोठा घास घेते. पण माझा विश्वास तुमच्या पांडुरंगावर आता अजिबात राहिला नाही. मला वाटते हा तुमचा पांडुरंग म्हणजे माणसांच्या बुद्धिला लागलेली कीड आहे. एकदा का ही कीड माणसाला लागली की, तो माणूस स्वतंत्र पणे विचारच करु शकत नाही. त्याची चिकित्सक बुद्धि नष्ट होते."[९]

सवर्णो तथा धर्म के अनुयायियों ने विकृति का ही प्रदर्शन किया है। दलितों की कुएँ में मरा हुआ कुत्ता फेंका और उन्हें प्यासा देखकर तमाशा देखने की प्रवृति कोई मानवीय नहीं बल्कि पशुता की निशानी है , **यहाँ मनुष्य को कोई स्थान नहीं** इस तरह का साक्षात्कार कई बार दिखाया गया है, पाटील , विठ्ठल, ढेकळ, ढीवर, गुरव, अच्युत, नानू जैसे पात्र सवर्ण हैं जो खलनायक के रुप में चित्रि त हैं। इनके कुकर्म से सखु, विनायक, यादव, मुकुंद, शंभू पवार, विनायक काफी परेशान हो जाते हैं , ये हर पल संघर्ष तथा व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करते हैं और परेशान हो जाते हैं अंत में भक्तिभाव को दूर करनेवाले शंभू का चित्रि त किया है उन्हें भी हिंदू धर्म की विकृतियों का दर्शन होता है और उन्हें डॉ. बी. आर. अंबेडकर के धर्म परिवर्तन की याद आती है। सारी समस्याओं की जड आस्था या भक्तिभाव होने का बोध उन्हें होता है।

मुकुंद सखु को बहु के रुप में स्वीकारता है और शंभू खुश होकर धर्म परिवर्तन करता है बौदध धर्म को स्वीकारता है, और अन्य को भी प्रेरित करता है। उन्हे यह समझाता है की हिंदू धर्म में बुद्धिमान व्यक्ति को जीना दुभर है। इसमें जाती को छोडकर मानव के रुप में जीवन जीना कठिण है यहाँ किसी भी महामानव को शूद्र के रुप में जगने के लिए विवश किया तो वह भी शंभू पवार के राह पर जाना पसंद करेगा, उसे समझ में आएगा कि यहाँ मनुष्य को कोई स्थान नहीं।

इसमें अभिव्यक्त संवाद काफी प्रभावी एवं पाठकों को विचार करने के लिए बाध्य करते हैं। इसमें ही इसकी सफलता निश्चित है।

४. चयनित नाटयकृतियों में साम्य :-

साम्य (समानता)

हिंदी दलित नाटक तडप मुक्ति की और मराठी दलित नाटक 'इथे माणसाला स्थान नाही' शीर्षक नाटकों में अभिव्यक्त समानता के बिंदु इसप्रकार है।

१. हर चुनौति तथा खतरों का जवाब हो :-

'तडप मुक्ति की' शीर्षक कहानी के नायक मनोजकुमार एक जिद्दी, साहसी, चरित्र संपन्न, शिक्षित दलित युवक है जो शिक्षा के साथ - साथ समाजसुधारक का कार्य बडे लगन से करता है। उसमें हर चुनौतियों का सामना करने का साहस है। मराठी दलित नाटक का नायक शंभू पवार भी आए दिन कठिन परिस्थियों का सामना करता है। दलितों मे साहस होने पर ही वह हर वार को कॉटने की कुशलता प्राप्त करेगा। उसके सामने खतरे कम नहीं है, इस बात का बोध देता है। इस बात का समर्थन मुकुंद, सखाराम, विनायक आदि पात्र करते हैं।

२. अंबेडकरी विचारों के निर्वाह में :-

अंबेडकरी विचारों के निर्वाह में दोनों नाटयकृतियों में साम्य है दलित के समानता के प्रति में विद्रोह का भाव दिखाया है। हर पल मानवीयता का पैगाम प्रस्तुत करने का प्रयास नाटयकारों का है। सामाजिक, अर्थिक राजनीतिक, विषमता से मुक्त होने की तडपन दोन्हों कृतियों मे दिखाई देती हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से प्रस्तुत रचनाएँ व्यापक अर्थ प्रस्तुत करती है इसमें कई समाजिक समस्याएँ चित्रित है। तडप मुक्ति में अंबेडकरी विचार के अनुसरण में समापन दर्शाया है। ब्राम्हण कन्या मनोजकुमार को अंतर्राजातिय शादी संबंधि सलाह देती है तो 'इथ माणसाला स्थान नाही ' शीर्षक मराठी नाटक के अंत में धर्मांतर की सलाह है, जो अंबेडकरी विचार का एक अनुभाग रहा है।

३. वेदनानुभूति में साम्य :-

आर्थिक बेकार, विवाह समस्या उँच नीच की भावना प्रदर्शन में वेदनानुभूति की निजी प्रतिक्रिया दोनों रचनाओं में मिलती हैं। मक्कारी या ढोंगी लोगों के व्यवहार का समझाने का प्रयास हो गया है। तडप मुक्ति में की शीर्षक में मनोजकुमार दलित होने से बचने के हेतु जनरल सीट पर स्वयं की योग्यता दर्ज करता है, फिर भी उसे अपमानीत होना पडता है, मराठी दलित नाटक में विठ्ठल की हुकुमत और इथे मानसाला स्थान

नाही नाटक में चित्रित गुंडाई करने वाले युवक ब्राम्हण जाति के है जिन्हें अपने बुरे कर्म पर विश्वास तथा श्रद्धा है । उन्हें अपना कर्म कभी अनैतिक लगता ही नहीं । इस में दलित की वेदनानुभुति तथा शोषक के चित्रण में साम्य प्रतीत होता है ।

४. नारी विवशता का चित्रण :-

दलित नारी को अपनी सुंदरता तथा रक्षा के लिए बहुत सजग रहने का समय है । नायिका सुषमादेवी तथा सखु दोनों के विचारों में सच्चाई है । दोनों का चरित्रांकन एक जैसा प्रतीत होता है । नाटककारों नें नारीं चित्रण में सतर्कता दिखाई है । विषय से अनुरुप नारियों क चित्रण हुआ है । आधु. युवतियों की सजगता, स्पष्टता भावुकता एवं वफादारी पर प्रकाश डाला है । सुषमादेवी तथा सखु का चरित्रांकन एक जैसा है । जडावती नामक महिला का चरित्रांकन आधु. महिला राजनीतिक के रुप में है । इसतरह कथ्य, शिल्प, माहौल, में साम्य नजर आता है ।

५.१ कथ्य में वैषम्य :-

'तडप मुक्ति की' दलित नाटक में अर्थिक विषमता जाति प्रथा भ्रष्टाचार, ढोंगी राजनीति का पर्दाफाश किया है, स्वार्थी तथा श्रेष्ठता का रुतबा प्रस्तुत करनेवाले वर्ग पर प्रकाश डाला है, साथ ही दलितों की अधिकारी या सवर्णों के जकडन से मुक्त होने की तडप को समझाया है । नारी तथा दलित दोनों की करुणावस्था के समझाना ने का प्रयास किया है ।

'इथ माणसाला स्थान नाहीं ' शीर्षक मराठी या कथ्य दैववाद, जातिवाद, भोगवाद, आतंकवाद तथा मनुवाद की वृत्ति को समझाता है । उपरि नाटकों में राजनीतिक माहौल का अधिक चित्रण है तो मराठी दलित नाटक में सामाजिक वैमनस्य भाव को किसतरह बढावा दिया जाता है? इस सवाल के जवाब में पाठकोंको चिंतामग्न किया है ।

५.२ उद्देश्य में विषमता :-

तडप मुक्ति की नामक नाटक के प्रयोजन इस प्रकार है,

१. आर्थिक विषमता एवं उसमें भ्रष्टाचार की स्थिति को समझाना ।
२. समानता मूल्य के निर्वाह में अंतर को समझाना ।
३. महिला दलित नेता की स्थिति को चित्रित करना ।
४. महिला के विचारों की दृढता एवं साहस पर प्रकाश डालना ।
५. दलित युवकों के साहस एवं चारित्रिक खासियत को समझाना ।
६. धर्म परिवर्तन को नकारना ।

'मराठी नाटक इथे माणसाला स्थान नाही' रचना के उद्देश इस प्रकार हैं

१. दैववाद के खोकलेपण को समझाना ।
२. जाति तथा धर्मभेद को तबाह करने संबंधी उपदेश देना ।
३. प्रेमभाव में वासना या कामुकता की अधिकता पर प्रकाश डालना ।
४. उच्च समाज की नीचता पर प्रकाश डालना ।
५. विद्रोह के भाव को व्यक्त करना ।
६. रुढि परंपरा के निर्वाह में सवर्णो की लडाई ।
७. समानत मूल्य का समझाना ।
८. दलितों की दृढता तथा हिम्मत की स्थिति को दर्शाना ।
९. भक्ति मूल्य के निर्वाह में मतलब का नजरिया को व्यक्त करना ।
१०. धर्म परिवर्तन की दिशा पर विश्वास व्यक्त करना प्रस्तुत नाटक का उद्देश है । अतः प्रस्तुत रचना के कई उद्देश हैं ।

५.३ रचना कलेवर में अंतर (विषमता) :-

दोनों नाटयकृतियों के कलेवर में वैषम्य है । 'तडप मुक्ति की ' नाटक ७२ पन्ने में लिखा है तो 'इथे माणसाला स्थान नाहीं ' नामक रचना के कुल ४९ पन्ने हैं । मराठी की छोटी सी रचना होकर भी वस्तु फलक बडा एवं मार्मिक है । प्रस्तुत रचनाओंका कलेवर छोटा है मगर अर्थ की दृष्टि से अहम है । एक रचना अपने ही समज के कुकर्मो से पीडित दलितों क दस्तावेज है तो दूसरी रचना धर्म तथा दैववाद की भावना से पीडित है भक्तिभाव क मूल्य दलितों को पंगु या मृतवत करने का एक साधन है मात्र है । हिंदी रचना में समस्यापूर्ति के साधन या माध्यम भी बताया है । अंतर्राजातिय विवाह ही जातिप्रथा का उन्मूलन करेगी । यह समझाने का प्रयास है । मराठी दलित नाटक में धर्मान्तर समस्यापूर्ति का साधन बताया है । धर्मांतर से क्षति होती है । नौकरियों तथा राजनीतिक स्थानों पर आरक्षण नहीं मिल पाता । यह मनाप्रसादजी ने पाठकों को समझ ाने की कोशिस की है । मौजूदा हालत कई गुणा बेहतर है

५. ४ भाषासौदर्य :-

दलित साहित्य का सौदर्य हिंदी की तुलना में मराठी दलित नाटकको में अधिक देखा जाता है। संवाद एवं भाषा के चयन में यह सौदर्य बिखरा है। सौदर्य ही आकर्षण का विषय है। जहॉं सत्य है, वहॉं सौदर्य मिलता है जिसकी ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। उदाहरण स्वरुप कुछ वाक्य इस प्रकार हैं।

जैसे - १. वाघानं गायीचा जीव वाचावा म्हणून परमेश्वराजवळ प्रार्थना करण्यासारखंच आहे.

२. तुमच काही चुकल नाही. चुकल तर निसर्गाचं इथं माणूस माणसा-माणसात भेदभाव करतो आहे आणि दुसरीकडे निसर्ग मात्र कोणताही भेदभाव न करता आपला कायदा बिनघोर पाळतो आहे.[११] (शंभु)

३. यादव यह कथन, "अरे, असेल कोणाची मायव्याली माझी जीभ बाहेर काढायला तर या पुढे.

साल्यांनो एक एकटे धरुन मारता, थू तुमच्यावर "[१२]

४. अच्यूत परंपरावादी पात्र है। उसका कथन, "शंभू ! अरे तू भक्त असलास तरी आपली पायरी सोडून भागेल बाबा ? चोखामेळयासारखे संत तुमच्या जाती जमातीत आहे. पण ते आपली पायरी सोडून वागल्याचे कधी वाचले, ऐकले आहेस तू ? तू स्वतःच सुसंस्कृत आहेस. शहाणपणाच्या गोष्टी संग तुझ्या लेकराला. जो तो आपली पायरी सोडून वागायला लागला तर अनर्थ नाही क ओढणार ? धर्म अधर्म नाही का होणार ?"[१३]

५. "विनायक की व्याकुलता इन शब्दों में व्यक्त हुई है, " इथे माणूस असूनही पशुचं जीण जगायचं आहे कि इथून बाहेर पडून माणसारखं जगायचं आहे ? "[१४]

६. पाटील के सामने विनायक एक शर्त प्रस्तुत करता है, तब गुस्से में वह कहता है, " चला गुरव हया धेळग्याच्या घरी कोणाला बसायला खुशी आहे ? चल विठ्ठल"[१५]

७. धर्म एवं जाति के खातिर दोस्ती को खारिज करने वाले पाटील को मुकुंद इन शब्दों में फटकारता है," ठिक है जैसे तुम दोस्ती के खातिर अपना समाज और धर्म छोडने को तैयार नहीं तो मैं भी मेरा समाज छोड नहीं सकता। लेकिन खबरदार, यदि कोई भी टेडी हरकत मेरे समाज के साथ की तो मुकुंद की दोस्ती देखी है, दुश्मनी भी देख लेना। " [१६]

" तडप मुक्ती की " शीर्षक हिंदी दलित नाटक के पात्र ज्यादातर शिक्षित हैं फिर भी इसकी भाषा साहित्यिक न होकर साधारण पढे - लिखों की भाषा प्रतीत होती है आम लोगों के लिए लिखी गई होने के कारण इसमें ललित्य का होना जायद नहीं लगता। भाषाशैली सरल एवं बोधगम्य है। उदाहरण स्वरुप - कुछ वाक्य.

१. " धर्मो में घृणा पैदा करने की भावना मानवता के लिए अभिशाप है। इससे बचना चाहिए।" [१७]

२. मनोजकुमार :"इस लडकी को यह गुण्डे दबर्दस्ती पकडे लिए जा रहे हैं मैं इनको मना कर रहा हूँ तो यह गुण्डई पर उतर आए हैं।" [१८]

३. दलित विचार फूलचंदभारती कहता है, " आज हमारे दलित समाज में भी ब्राम्हणवादी विचार पनप रहे हैं। उच्च पदों पर बैठे अधिकारी जो दलित के नाम पर ही आगे बढे है, वे अपने समाज से कटते जा रहे हैं।"[१९]

४. सुषमादेवी ब्राम्हणत्वं की श्रेष्ठता पर अविश्वास करके दलितों में देवत्व देखती है। इस संबंध में उसका यह कहना रहा है, " तुम्हे मैं देवता मानती हूँ। क्या हम दोनों एक साथ नही रह सकते ? "

इस तरह के कई सरल एवं बोधगम्य संवाद अभिव्यक्त हैं। इन संवादों की भाषा पात्रानुकूल रही है। मराठी दलित नाटकों की भाषा में जो स्पष्टता एवं विद्रोह क भाव है वह अधिक भाता है। जाहिर सी बात है कि मराठी दलित नाटक 'इथे माणसाला स्थान नाही ' भाषा एवं संवाद शैली की दृष्टि से श्रेष्ठतम प्रतीत होती है।

निष्कर्ष :-

मनुवादी व्यवस्था, अंधविश्वास एवं भक्ति दैववाद के कारण आधुनिक समाज में अनेक बूरे रीतिरिवाज पल्लवित हैं। भारत स्वात्रंता के ६४ साल बित जाने पर भी जाति के नाम पर आज भी अमानवीयता का प्रदर्शन समाज में होता है। २०११ में घटित सातारा की औंध की अमानवीय घटना सबको अंचबित करती है तथा विचार करने के लिए बाध्य करती है। आधुनिक काल में इसतरह की कई घटनाऍं हो रही हैं जिसकी ओर नजर अंदाज नहीं किया जाता। दलित साहित्य का हिंदी साहित्य पर गहरा असर हो गया है। महाराष्ट्र की भूमि पुरोगामी विचार की है फिर भी एक पिताजी अपनी शिक्षित कन्या को मारने का प्रयास करता है यह भी एक चिंतनीय बात हैं। मराठी तथा महाराष्ट्र की सारी गतिविधियों का असर हिंदी भाषा पर आधिकांश रुप में होता है। जाहिर सी बात है कि मराठी दलित नाटकों का असर या प्रभाव हिंदी पर बहुत गहरा है इसे नकरा नहीं जा सकता।

संदर्भ संकेत :-

१. स्वातंत्रोत्तर हिंदी नाटकों में शोषण के विभिन्न रुप डॉ. सुरेश नायडे कानपुर २००९ पृ. ३०२.
२. दलित पत्र कारिता के समाजिक सरोकार रुपचंद गौतम पृ. ११८-११९.

३. तडप मुक्ति की - माताप्रसाद सागर प्रकाशन २००८ पृ. ५.
४. ------ // ------ वही पृ. ७१.
५. ------ // ------ वही पृ. ७२.
६. इथे माणसाला स्थान नाही- बाजीराव रामटेके समुचित्र प्रकाशन पुर्व १९९७ पृ. ८.
७. ------ // ------ वही पृ. १३.
८. ------ // ------ वही पृ. १५.
९. ------ // ------ वही पृ. ३६.
१०. ------ // ------ वही पृ. १०.
११. ------ // ------ वही पृ. १२.
१२. ------ // ------ वही पृ. १५.
१३. ------ // ------ वही पृ. १६.
१४. ------ // ------ वही पृ. १९.
१५. ------ // ------ वही पृ. ३०.
१६. ------ // ------ वही पृ. ४१.
१७. तडप मुक्ती की - माताप्रसाद पृ. ३५.
१८. ------ // ------ वही पृ. ५७.
१९. ------ // ------ वही पृ. ५९.